# तैत्तिरीयोपनिषत्स्थितपदार्थपरिचयः

१.१.१ - शान्तिपाठः।

१.२.१ - उच्चारणविधिर्वर्णादयः स्वरूपं वा - अकारादिर्वर्णाः, उदात्तादयः स्वराः, ह्रस्वादयो मात्रा, प्रयत्नश्च बलं, समता साम, संहितैव संतानः।

१.३.१ - प्रजापशुब्रह्मवर्चसान्नसुवर्ग्यलोकफलकं महासंहितोपासनं :-

| | पूर्वं | उत्तरं | संधिः | संधानं |
|---|---|---|---|---|
| अधिलोकं | पृथिवी | द्यौः | आकाशः | वायुः |
| अधिज्यौतिषं | अग्निः | आदित्यः | आपः | वैद्युतः |
| अधिविद्यं | आचार्यः | अन्तेवासी | विद्या | प्रवचनं |
| अधिप्रजं | माता | पिता | प्रजा | प्रजननं |
| अध्यात्मं | अधराहनुः | उत्तराहनुः | वाक् | जिह्वा |

१.४.१ - मेधप्राप्त्यर्थं जपमंत्रः। १.४.२ - १.४.३ = श्रीप्राप्त्यर्थं होममंत्राः।

१.५.१ - १.६.२ = स्वाराज्यफलकं हिरण्यगर्भोपासनं :-

| | भूः= पादौ | भुवः= बाहू | स्वः= शिरः | महः= आत्मा |
|---|---|---|---|---|
| अधिलोकं | पृथिवी | अन्तरिक्ष | द्यौः | आदित्य |
| अधिदेवं | अग्नि | वायु | आदित्य | चन्द्रमा |
| अधिवेदं | ऋक् | साम | यजुः | ऊँ = ब्रह्म |
| अधिप्राणः | प्राण | अपान | व्यान | अन्नं |

१.७.१ - स्वाराज्यफलकं हिरण्यगर्भस्यैव पाङ्क्तरूपेणोपासनं :-

| | | |
|---|---|---|
| अधिलोक | लोकपाङ्क्त | पृथिव्यन्तरिक्षद्यौर्दिशोघ्वान्तरदिशाः। |
| अधिदेव | देवपाङ्क्त | अग्निर्वायुरादित्यश्चन्द्रमा नक्षत्राणि। |
| अधिभूत | भूतपाङ्क्त | आप ओषधयो वनस्पतय आकाश आत्मा। |
| अधिवायु | वायुपाङ्क्त | प्राणो व्यानोघ्पान उदानः समानः। |
| अधीन्द्रिय | इन्द्रियपाङ्क्त | चक्षुःश्रोत्रं मनो वाक्त्वक्। |
| अधिधातु | धातुपाङ्क्त | चर्म मांसं स्नावास्थि मज्जा। |

१.८.१ - परापरब्रह्मप्राप्तिफलकोंकारोपासनं।

१.९.१ - वैदिकलौकिकसर्वकर्मणां पुरुषार्थं प्रति साधनत्वप्रदर्शनपरोऽनुवाकः।

१.१०.१- बह्मविद्याप्राप्त्यर्थं जपमंत्रः।,

१.११.१- पुरुषसंस्कारार्थकानुशासनोपदेशपरोऽनुवाकः।

१.१२.१- शान्तिपाठः।

Created by demo-version of Universal Document Converter. Full version doesn't add this stamp.
WWW.PRINT-DRIVER.COM